

## सोआर

कदें तुगी चेता निं कीता  
की जे तूं कदें भुल्लेआ गै नेई  
मेरी कविता, गज़ल, कहानी च  
तूं  
कुसै नां कुसै रूप च  
मेरे सामनै  
आई गै जन्ना ऐं-  
अक्खरें च लपटोए दा  
उं'दे अर्थे चा झांकदा  
शरारतां करदा  
लब्धी गै जन्ना ऐं  
में लिखां जां नेई लिखां  
तूं मेरी काहन्नी प म्हेशा सवार ऐं  
एह में नेई, सब मनदे न।



## हिस्सा

कभी याद नहीं लिया तुम्हें,  
क्योंकि तुम मुझे कभी भूल ही नहीं।

मेरी कविता, गज़ल, कहानी में तुम,  
किसी न किसी रूप में

मेरे समक्ष

आ ही जाते हो।

मेरे बंधे हुए अक्षरों से लिपटकर  
उन अक्षरों को अर्थों से झांकते,  
शरारत करते,

तुम मुझे फिर ही जाते हो।

में लिखूं या ना लिखूं

तुम मेरी कहानी, कविता, गज़ल  
को हिस्सा हमेशा रहते हो।

यह मैं नहीं सब मानते हैं।